DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-4 ,UNIT-2,FUNCTIONALISM :BASIC CONCEPT

LECTURE-16

प्रकार्यवाद : मूल अवधारणा (Functionalism: Basic concept)

प्रकार्यवाद मनोविज्ञान के इतिहास में एक प्रमुख सम्प्रदाय है जिसकी स्थापना संरचनावाद (structuralism)के विरोध में हुआ है | प्रकार्यवाद द्वारा चेतना तथा व्यवहार की उपयोगिताओं के अध्ययन पर बल डाला गया है |जब प्रकार्यवाद का प्रभाव अपने चरम सीमा पर था तो संरचनावाद का प्रभाव समाप्त होने लगा था | प्रकार्यवाद अमेरिकन मनोवैज्ञानिको का एक बहुत ही लचीला सम्प्रदाय था और उसके जन्म के पीछे कई पूर्ववर्ती कारक महत्वपूर्ण माने जाते है जिनके मूल रूप से दो वर्गो में विभाजित कर के मनोवैज्ञानिको द्वारा वर्णन किया है |

(i)**विकासात्मक सिद्धांत (evolutionary theory)**-स्पेंसर,डार्विन तथा गाल्टन तीनो मुख्य विकासात्मक श्रोत माने गये है जिन्होंने प्रकार्यवाद के स्कुल की उत्पत्ति में काफी योगदान दिया है |1885 में स्पेंसर ने

अपनी मशहुर पुस्तक **principles of psychology** का प्रकाशन किया |स्पेंसर के लिए विकास से तात्पर्य अस्पष्ट एकरूपता से स्पष्ट विषमरूपता में परिवर्तन से होता है जिसमे संघटन तथा विभेदीकरण की सतत प्रक्रिया सम्मिलित होती है |ऐसे परिवर्तनों द्वारा प्राणी अपने वाह्य वातावरण के साथ समायोजन करने की कोशिश करता है |प्रत्येक पशु अपने पर्यावरण में एक ख़ास ढंग से अनुक्रिया करता है |विकासात्मक सीढ़ी में प्राणी जितना ही ऊँचा होता है उसकी अनुक्रियायें उतनी ही जटिल एवं भिन्न होती है |साधारण अनुक्रियायें अलचिले होती है और पर्यावरण के साथ सम्पूर्ण समायोजन की और इशारा करता है |इन्हें प्रतिवर्त की संज्ञा दी जाती है |

विकासात्मक सीढ़ी के उच्चतर पशु अधिक जटिल प्रतिवर्त क्रियाएं करती है जिसे मूलप्रवृति कहा जाता है |उच्चतर पशु सामान्यतः अधिक जटिल एवं लचीले व्यवहार करते है जो सरल एवं अमिश्रित व्यवहारों से ही समायोजन की प्रक्रिया द्वारा विकसित होते है |सभी उच्चतर मानसिक कार्य इसी प्रक्रिया के अंश होते है |स्पेंसर ने किसी सजीव विषयी में चेतना के विकास के लिए इसे एक महत्वपूर्ण कारक माना है तथा निर्जीव विषयी से सजीव विषयी के विकास के लिए मूल तत्व माना है| इस मान्यता द्वारा जैविक समस्याओं का मनोविज्ञान के क्षेत्र में अंतरण होता है और स्पेंसर का मनोविज्ञान एक तरह से प्रथम प्रकार्यवादी मनोविज्ञान की भूमिका में आ जाता है |

चार्ल्स डार्विन दुसरे ऐसे व्यक्ति है जिनके विचारों से प्रकार्यवाद काफी प्रभावित हुआ है |उनकी एक प्रसिद्ध पुस्तक "**origin of species"1859** में प्रकाशित हुआ और 1872 में दूसरी महत्वपूर्ण पुस्तक expressions of the emotions in man and animals प्रकाशित हुई |डार्विन ने स्पेंसर के

विचारधारा की प्रशंसा की और यह कहा की अस्तित्व के लिए संघर्ष ही जिन्दगी है |उत्तम ढंग से समायोजित प्राणी ही को जीवित रहने की संभावना अधिक होती है तथा स्वभाविक चयन के माध्यम से ऐसे ही प्राणी पुनरुत्पादन करने में भी सक्षम होते है |वैसे प्राणी जो अपने पर्यावरण के साथ समायोजन नहीं कर पाते है ,वे जीवित नहीं रह पाते है और पुनरुत्पादन में भी सक्रियेता नहीं पाते है |डार्विन का मत है की सभी मानसिक क्रियाओं की व्याख्या समायोजित प्रकार्य के रूप में करना चाहिए | डार्विन ने यह भी मत स्पष्ट किया कि समायोजन एवं अनुकूलन की सम्पूर्ण प्रक्रिया का सम्बन्ध मनोवैज्ञानिक एवं दैहिक प्रकार्यों से होता है |क्योंकि मन का विकास शरीर के साथ –साथ ही होता है |डार्विन ने संवेग को जैविक रूप से लाभदायक प्रकार्य माना है और उनकी अभिव्यक्ति से कोई निश्चित उद्देश्य की पूर्ति होती है |ऐसा कहा जाता है की डार्विन के सिद्धांत या विचारधाराओं से समग्र रूप से (on the whole) पशुओं तथा मनुष्यों के बीच सांतत्यता को स्थापित करने में मदद मिलती है और इस सांतत्यता से पशु मनोविज्ञान के कार्य क्षेत्र विकसित हो जाता है और प्रकार्यवादी मनोविज्ञान को अपने आप बल मिलता है |सर फ्रांसिस गाल्टन जो चार्ल्स डार्विन के चचेरे भाई थे मनुष्यों में अनुवांशिक कारको की अहम भूमिका को स्वीकृत किया |वैयक्तिक विभिन्नता के अध्ययनों से मनोविज्ञान में उपयोगितावादी विचारधारा को बल मिला जिससे मानसिक शीलगुणों के विकास के अध्ययनों को प्रोत्साहन मिला |इस तरह के उपयोगितावादी विचारों का प्रकार्यवाद के नींव पर गहरा प्रभाव पड़ा |

(ii)**विलियम जेम्स का मनोविज्ञान (psychology of william james)-** इतिहासकारों ने विलियम जेम्स को प्रकार्यवाद का एक महत्वपूर्ण अग्रदूत माना है ऐसे लोगो का मत है की विलियम जेम्स ने एक सम्प्रदाय के

रूप में प्रकार्यवाद की संस्थापना अपनी पुस्तक "**principles of psychology 1980**"के दोनों जिल्दों में कर चुके थे |जेम्स का मत था की व्यक्ति के व्यवहार अनुकूलि होते है और मनोविज्ञानिक रूप से जीवित रहने के लिए प्राणी को अपने पर्यावरण के साथ समायोजन करना आवश्यक है |उनका यही विचार प्रकार्यवाद के लिए एक सारतत्व बन गया |उपयोगितावाद पर जेम्स के जो विचार थे , प्रकार्यवाद की स्थापना पर उनके भी बड़े रोचक प्रभाव पड़े |एक उपयोगितावादी के रूप में वे इस तथ्य पर बल डाले की किसी भी ज्ञान की वैधीकरण उसके परिणामों के रूप में किया जाना चाहिए | प्रकार्यवादी मनोवैज्ञानिको द्वारा जेम्स के उपयोगितावाद को अपने मनोविज्ञान में दर्शाकर उसके कार्य क्षेत्र को विकसित किया गया |

अतः स्पष्ट हुआ की प्रकार्यवाद की स्थापना में स्पेंसर ,डार्विन तथा गाल्टन के विकासवादी विचारधारों का काफी प्रभाव पड़ा था इस दिशा में विलियम जेम्स के मनोविज्ञान को भी कम महत्वपूर्ण नहीं माना गया है|